कुमार जीवन - 74

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ अच्छा - तो कुमार अभी क्या करेंगे? निमन्त्रण मिला। स्पेशल खातिरी हुई। देखो, कितने लाडले हो गये हो। तो अभी आगे क्या करेंगे? रेसपान्ड देंगे या वहाँ गये तो वहाँ के, यहाँ आये तो यहाँ के? ऐसे तो नहीं है ना? यहाँ तो बहुत मजे में हो। माया के वार से बचे हुए हो, **ऐसा कोई है जिसको यहाँ मधुबन में भी माया आई हो? ऐसा कोई है जिसको मधुबन में भी मेहनत करनी पड़ी हो?** सेफ हो, अच्छा है। बापदादा भी खुश होते हैं।

➳ _ ➳ समय आयेगा जब यूथ ग्रुप पर गवर्मेन्ट का भी अटेन्शन जायेगा लेकिन तब जायेगा जब आप विघ्न-विनाशक बन जाओ। "विघ्न-विनाशक" किसका नाम है? आप लोगों का है ना! विघ्नों की हिम्मत नहीं हो जो कोई कुमार का सामना करे, तब कहेंगे "विघ्न-विनाशक"। विघ्न की हार भले हो, लेकिन वार नहीं करे। **विघ्न-विनाशक बनने की हिम्मत है?**

➳ _ ➳ या वहाँ जाकर पत्र लिखेंगे दादी बहुत अच्छा था लेकिन पता नहीं क्या हो गया! ऐसे तो नहीं लिखेंगे? यही खुशखबरी लिखो - **ओ. के., वेरी गुड, विघ्न-विनाशक हूँ।** बस एक अक्षर लिखो। ज्यादा लम्बा पत्र नहीं। ओ. के.। लम्बा पत्र हो तो लिखने में भी आपको शर्म आयेगा। शर्म आयेगा ना कि कैसे लिखें, क्या लिखें!

➳ _ ➳ कई बच्चे कहते हैं पोतामेल लिखने चाहते हैं लेकिन जब सोचते हैं कि पोतामेल लिखें तो उस दिन कोई न कोई ऐसी बात हो जाती है जो लिखने की हिम्मत ही नहीं होती है। बात हुई क्यों? विघ्न-विनाशक टाइटल नहीं है क्या? बाप कहते हैं **लिखने से, बताने से आधा कट जाता है।** फायदा है। लेकिन लम्बा पत्र नहीं लिखो, ओ. के. बस। **अगर कभी कोई गलती हो जाती है तो दूसरे दिन विशेष अटेन्शन रख विघ्नविनाशक बन फिर ओ. के. का लिखो।** लम्बी कथा नहीं लिखना। यह हुआ, यह हुआ... इसने यह कहा, उसने यह कहा.... यह रामायण और उनकी कथायें हैं। ज्ञान मार्ग का एक ही अक्षर है, कौन सा अक्षर है? ओ. के.(ध.ख.)। जैसे शिवबाबा गोल-गोल होता है ना वैसे ओ (ध) भी लिखते हैं। और के (ख) अपनी किंगडम। तो **ओ.के. माना बाप भी याद रहा और किंगडम भी याद रही।**

➳ _ ➳ इसलिए ओ. के.... और ओ.के. लिखकर ऐसे नहीं रोज़ पोस्ट लिखो और पोस्ट का खर्चा बढ़ जाए। ओ.के. लिखकर अपने टीचर के पास जमा करो और टीचर फिर 15 दिन वा मास में एक साथ सबका समाचार लिखे। पोस्ट में इतना खर्चा नहीं करना, बचाना है ना। और यहाँ पोस्ट इतनी हो जायेगी जो यहाँ समय ही नहीं होगा। आप रोज़ लिखो और टीचर जमा करे और टीचर एक ही कागज में लिखे - ओ.के. या नो (न्द)। इंगलिश नहीं आती लेकिन ओ.के. लिखना तो आयेगा, नो लिखना भी आयेगा। अगर नहीं आये तो बस यही लिखो कि ठीक रहा या नहीं ठीक रहा। तो यूथ की रिजल्ट क्या आयेगी? ओ.के. की आयेगी? या कहेंगे वहाँ गये ना ऐसा हुआ, वैसा हुआ! ऐसा वैसा नहीं करना।

➳ _ ➳ यूथ अपनी कमाल दिखाओ। जो सब कहें कि नम्बरवन यूथ ग्रुप है। तो स्पेशल मिला? वैसे पार्टी में आते हो तो सामने थोड़ेही बैठने को मिलता है। कोई कहाँ,

कोई कहाँ बैठते, अभी तो बिल्कुल सामने बैठे हो। तो **इस मधुबन के स्नेह, शक्ति को भूल नहीं जाना। सदा कुछ भी हो, मधुबन की रिफ्रेशमेंट को याद करना।** ऐसे है यूथ? देखेंगे। सारे ब्राह्मण परिवार की नज़र इस समय यूथ पर है। यूथ क्या कर रहा है, क्या आगे करता है! सब यही सोच रहे हैं। **(15-11-1999)**

➢➢ पुरुषार्थ के मुख्य बिंदु

➳ _ ➳ शुभ भावना रखने के 2 फायदे

→ आपके मन में दुर्भावना आने का कोई चांस ही ख़तम हो जायेगी

→ जो भावना आपके मन में उत्पन्न होती है... वही भावना उसके मन में भी उत्पन्न होगी

➳ _ ➳ भगवान को सुनाने की बजाये मनुष्य को सुनाने के नुक्सान

→ मनुष्य को सुनाने से उत्तर भले वो दे दे

- पर शक्ति नहीं मिलेगी

→ देहधारी के ऊपर सूक्षम निर्भरता उत्पन्न होने लगती है

- निसंग की अवस्था नहीं रहती है

➳ _ ➳ देहधारी की आदत पड जायेगी

→ बार बार हर बात उसको सुनाने जायेंगे

- "एक बल एक भरोसा" की स्थिति नहीं बन पाएगी

➳ _ ➳ देहधारी से आसक्ति उत्पन्न हो जाती है

➳ _ ➳ छोटी छोटी बातों का unnecessary विस्तार होगा

➳ _ ➳ बहुत जल्दी परचिन्तन परदरशन भी शुरू हो सकता है

➳ _ ➳ हिसाब किताब भी बन सकता है

➳ _ ➳ बाबा से प्यार Divide (बंट) जाता है

➳ _ ➳ सिर्फ एक परमात्मा को सुनाने से मन एकाग्र होता है